Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में आईसीटी का अनुप्रयोग

Parul Shrivastava[1]*, Dr. Mohan Lal Kaushal[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - ***आईसीटी उपकरणों के उचित संचालन और रखरखाव, पुस्तक और सामग्री के प्रबंधन, पुस्तकालयों में समय प्रबंधन की कमी, पुस्तकालय कर्मचारियों की जनशक्ति की कमी, पूरे विश्वविद्यालय के आसपास सामग्री और पुस्तक के बंटवारे की कमी के कारण धन की सीमा अपर्याप्त है। पुस्तकालय पेशेवर सूचना संचार प्रौद्योगिकियों में प्रगति के बारे में जानने में सक्षम रहे हैं, चाहे विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों ने उन्हें नवीनतम तकनीकों को संभालने में मदद की और पेशे में आगे की शिक्षा और प्रशिक्षण की उनकी आवश्यकता थी। आईसीटी भविष्य के अवसरों के लिए पायलट है, जो पुस्तकालयों में जबरदस्त विकास के साथ-साथ चुनौतियां भी लाता है।***

कीवर्ड - ***विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, आईसीटी, अनुप्रयोग***

----------X----------

परिचय

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आज की वैश्वीकृत दुनिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसा कि यह हर संगठन की आधारशिला बनता जा रहा है, यह संगठन की संरचना और प्रबंधन और वितरण प्रक्रिया में बहुत बड़ा बदलाव ला रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) विषयों के बहु-विषयक क्षेत्रों में ज्ञान के ब्रह्मांड में दुनिया भर में लगातार उत्पन्न जानकारी को प्राप्त करने, भंडारण, प्रसंस्करण, पुनर्प्राप्त करने और वितरित करने की प्रक्रिया में मूलभूत परिवर्तन लाती है। आईटी का प्रभाव आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और यहां तक कि जीवन के व्यक्तिगत क्षेत्रों में भी पड़ा है। इसने दुनिया भर के समाजों को नाटकीय रूप से बदल दिया है। **(1)**

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के अनुप्रयोग ने सूचना युग में प्रवेश किया है। आईसीटी ने विभिन्न पहलुओं में व्यक्ति की शक्ति के विकास को बदल दिया है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय सीखने के मंदिर हैं जो आईसीटी मुख्य घटक है जो उपयोगकर्ताओं को विभिन्न लाभ प्रदान करता है। आईसीटी भविष्य के अवसरों के लिए पायलट है जो पुस्तकालयों में जबरदस्त विकास के साथ-साथ चुनौतियां भी लाता है।

सूचना की अवधारणा

सूचना की अवधारणा जैसा कि हम हर दिन अंग्रेजी में इसका इस्तेमाल करते हैं, संप्रेषित ज्ञान में आज के समाज में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कंप्यूटर नेटवर्क के व्यापक उपयोग के साथ अवधारणा प्रमुख हो गई। यद्यपि ज्ञान और उसका संचार मानव समाज की बुनियादी घटनाएँ हैं, यह सूचना प्रौद्योगिकी और इसके वैश्विक प्रभावों का उदय है जो एक सूचना समाज के रूप में हमारी विशेषता है। सूचना समाज एक ऐसे समाज के लिए एक शब्द है जिसमें सूचना का निर्माण, वितरण और हेरफेर होता है। सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधि बन गई है। (2)

सूचना की परिभाषा

सूचना विभिन्न तरीकों से उत्पन्न होती है और विभिन्न स्रोतों में दर्ज की जाती है और उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग के लिए उपलब्ध कराई जाती है। दूसरी ओर, प्रत्येक उपयोगकर्ता को अध्ययन, शोध, समस्या समाधान या मनोरंजन जैसी विभिन्न गतिविधियों के लिए जानकारी की आवश्यकता होती है। उपयोगकर्ता द्वारा आवश्यक

www.ignited.in

जानकारी के प्रकार को वर्तमान, पृष्ठभूमि, सांख्यिकीय या शोध प्रकार के रूप में परिभाषित किया गया है। उपयोगी जानकारी वह है जिसका उपयोग किया जाता है और जो मूल्य बनाता है। अनुभव और शोध से पता चलता है कि अच्छी जानकारी में कई गुण होते हैं। यह जानकारी एक उद्देश्य के लिए प्रासंगिक है, समय पर, सटीक, पूर्ण, विश्वसनीय और सही व्यक्ति को लक्षित होनी चाहिए।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

आईसीटी का आगमन विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एक अद्भुत उपहार है जिसने पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में भारी परिवर्तन किया है। आईसीटी नई वैश्विक अर्थव्यवस्था के निर्माण और समाज में तेजी से बदलाव लाने का एक उपकरण है। अनुसंधान एवं विकास और सूचना केंद्रों में आईसीटी के प्रभावी अनुप्रयोग ने सूचना प्रबंधन में अनुसंधान के तरीकों और तकनीकों में सुधार किया है। अनुसंधान एवं विकास पुस्तकालयों का मुख्य उद्देश्य सूचना को उचित प्रक्रिया और पुनः प्राप्त करना और अनुसंधान समुदाय को बहुत आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराना है। यह अध्ययन चेन्नई में आर एंड डी पुस्तकालयों में आईसीटी विधियों के कार्यान्वयन और उपयोग, और इन पुस्तकालयों में आईसीटी की सीमा के स्तर का खुलासा करता है और आधुनिक तकनीकों को पेश करने का भी सुझाव देता है। आईसीटी पुस्तकालय प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जिसका व्यापक रूप से आर एंड डी पुस्तकालयों में उपयोग किया जा सकता है। (3)

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग

आईसीटी ने मानव पर्यावरण के सभी चरणों पर काफी प्रभाव डाला है, प्रभाव बैंकिंग, स्वास्थ्य, परिवहन, शिक्षा और पुस्तकालय और सूचना केंद्रों जैसी सेवा गतिविधियों के मामले में प्रकट हुआ है। पुस्तकालय मामले में पटेल (**2012**) के अनुसार, आईसीटी ने डेटाबेस या हाउसकीपिंग संचालन के साथ-साथ सेवाओं को वितरित करने के तरीके को बड़े पैमाने पर बदल दिया है। उन्होंने आगे कहा कि आईसीटी ने पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में असाधारण परिवर्तन और पुनर्निर्माण किया है। **(4)**

एक अन्य आयाम में, इस्लाम और इस्लाम (**2006**) ने आईसीटी और आईटी की एक समानांतर अवधारणा के रूप में तुलना की, जो न केवल प्रौद्योगिकी की एक साधारण इकाई को दर्शाता है बल्कि संचार उपकरण, डेटा प्रोसेसिंग उपकरण, अर्ध-कंडक्टर, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स इत्यादि जैसी प्रौद्योगिकियों का एक संयोजन है। आईसीटी के उद्भव ने पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में जबरदस्त बदलाव लाए हैं। पुस्तकालय और सूचना केंद्रों के लिए आईटी का अनुप्रयोग रूपांतरित हो गया है और पुस्तकालयों की पारंपरिक अवधारणा किताबों के एक स्टोर हाउस से एक बौद्धिक सूचना केंद्रों तक डिजिटल पुस्तकालय की अवधारणा को दर्शाती है। इसने पुस्तकालय संचार में एक नया अध्याय खोला है और भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए सूचना तक वैश्विक पहुंच की सुविधा प्रदान की है।

आईसीटी के आगमन के साथ, पुस्तकालय अब सेवा प्रदान करने में सहायता के लिए विभिन्न प्रकार की तकनीकों का उपयोग करते हैं। हर दिन, नई तकनीकी प्रगति पुस्तकालय और सूचना केंद्रों में सूचना के तरीके को प्रभावित करती है। पुस्तकालय सेवाओं के हर क्षेत्र में आईसीटी लागू किया गया है, विशेष रूप से पुस्तकालय डेटाबेस सुधार रणनीतियों, पुस्तकालय संरचना और संघ के रूप में। आईसीटी ने अपने ग्राहकों को मूल्य वर्धित सूचना सेवाएं और डिजिटल आधारित सूचना संसाधनों की एक विस्तृत विविधता तक पहुंच प्रदान करने का अवसर दिया। **(5)**

पुस्तकालयों में आईसीटी के घटक

आईसीटी सूचना के सृजन, संग्रह, प्रसंस्करण, भंडारण, पुनर्प्राप्ति, संचार और वितरण में उपयोग किए जाने वाले उपकरणों और उपकरणों को संदर्भित करता है। यह कंप्यूटर, संचार और माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक आधारित प्रौद्योगिकियों का अभिसरण है। वर्तमान शताब्दी में, आईटी ने उपकरणों, सूचना उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करने के लिए इतनी तेजी से विस्तार किया है जिसने पुस्तकालय की भूमिका को वैश्विक सूचना संसाधनों तक पहुंचने के प्रवेश द्वार में बदल दिया है। आईसीटी आईटी के साथ एक व्यापक और समानांतर अवधारणा है, जो न केवल प्रौद्योगिकी की एक इकाई को दर्शाता है बल्कि दूरसंचार उपकरण, डेटा प्रोसेसिंग उपकरण, सेमी कंडक्टर, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स इत्यादि जैसी प्रौद्योगिकियों का एक संग्रह है। इस अवधारणा ने संग्रह में एक असाधारण परिवर्तन लाया है। , दुनिया भर में सूचना का संरक्षण और प्रसार। पुस्तकालयाध्यक्ष के पेशे के लिए, घटनाओं का यह मोड़ भेष में एक आशीर्वाद है। पाटिल, कुम्बरंद और कृष्णंदा (**1994**) ने आईटी के घटकों को वर्गीकृत किया, जिसका

www.ignited.in

उपयोग अक्सर पुस्तकालय और सूचना केंद्र में किया जाता है: **(6)**

- **कंप्यूटर प्रौद्योगिकी:** कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रसार ने मानव जीवन के हर क्षेत्र में सूचना प्रसारण प्रक्रिया में नाटकीय विकास किया है। कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में वर्तमान विकास में मेनफ्रेम कंप्यूटर, सुपर कंप्यूटर, मिनी कंप्यूटर, पर्सनल कंप्यूटर, माइक्रोचिप टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी और सीडी-रोम टेक्नोलॉजी शामिल हैं।

- **संचार प्रौद्योगिकी:** संचार या दूरसंचार प्रौद्योगिकियों का उपयोग सिग्नल के वाहक के रूप में विद्युत या विद्युत चुम्बकीय मीडिया का उपयोग करके दूरस्थ स्थान के बीच संकेतों के रूप में सूचना प्रसारित करने के लिए किया जाता है। दूरसंचार प्रौद्योगिकियों में ऑडियो टेक्नोलॉजी, ऑडियो-विजुअल टेक्नोलॉजी, मोशन पिक्चर, टीवी, वीडियोडिस्क, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एप्लिकेशन आदि शामिल हैं।

- **रिप्रोग्राफी और प्रकाशन प्रौद्योगिकी:** सूचना प्रसंस्करण के क्षेत्र की पहचान करने के लिए रिप्रोग्राफी और प्रकाशन प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है जो दस्तावेजों में डेटा के पुनरुत्पादन के लिए प्रौद्योगिकियों और उपकरणों से संबंधित है। माइक्रोग्राफिक आईटी का क्षेत्र है जो माइक्रोफॉर्म के उपयोग से संबंधित है।

पुस्तकालयों में आईसीटी के अनुप्रयोग के क्षेत्र

ओपेक, वेब ओपेक, सीडी-रोम नेटवर्क आदि को शामिल करने के लिए पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली पर आईसीटी का विस्तार हुआ है। पुस्तकालय मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रणालियों से युक्त हाउस कीपिंग फ़ंक्शन पर ध्यान केंद्रित करते हैं:

- **अधिग्रहण प्रणाली:** कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय में, पुस्तक की मांग से लेकर खरीद तक की अधिग्रहण प्रक्रिया कंप्यूटर द्वारा की जाती है। बिल रजिस्टर, व्यय रजिस्टर और प्रत्यक्ष विक्रेता प्रविष्टि आदि को बनाए रखना आसान और स्वचालित है।

- **कैटलॉगिंग सिस्टम:** कैटलॉगिंग एक महत्वपूर्ण कार्य है जो उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को लाइब्रेरी में दस्तावेज़ों से जोड़ता है। कम्प्यूटरीकृत कैटलॉग एक पुस्तकालय में दस्तावेजों के बारे में आसानी से और जल्दी से जानकारी प्राप्त करने में सबसे कुशल उपकरण है।

- **वर्गीकरण प्रणाली:** पुस्तक का कॉल नंबर मैन्युअल रूप से असाइन किया जाना है और प्रत्येक पुस्तक के लिए प्रासंगिक कॉल नंबर कीबोर्ड के माध्यम से कंप्यूटर में फीड किया जाना है। कंप्यूटर केवल एक्विजिशन मॉड्यूल से कीवर्ड्स लेकर सॉर्टिंग करते समय वर्णानुक्रमिक वर्गीकरण में मदद कर सकता है।

- **सर्कुलेशन सिस्टम:** उपयोगकर्ताओं के बीच पुस्तकों के संचलन को बनाए रखने में उपयोग किए जाने वाले कंप्यूटर, बारकोड स्कैनर और प्रबंधन सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों जैसे तकनीकी उपकरणों का उपयोग, जो सभी एक पुस्तकालय में नियमित संचालन को आसानी से और जल्दी से करने में मदद करते हैं। एक स्वचालित परिसंचरण प्रणाली ऋण पर आइटम के स्थान के बारे में जानकारी प्रदान करती है, रिजर्व पर, प्रिंट रिकॉल नोटिस, नवीनीकरण, जुर्माना की गणना, प्रिंट रिकॉल नोटिस, देय तिथि पर्चियों को प्रिंट करना और खोई हुई पुस्तकों के लिए स्वचालित रूप से ऑर्डर उत्पन्न करना और इंटर लाइब्रेरी ऋण लेनदेन के प्रावधान .

- **अनुच्छेद अनुक्रमण प्रणाली:** प्रणाली विभिन्न पत्रिकाओं, तकनीकी रिपोर्टों, सम्मेलन की कार्यवाही, मोनोग्राफ आदि से लेखों के अनुक्रमण और सार की सुविधा प्रदान करती है। इसमें लेखों की स्कैनिंग शामिल है; प्रशस्ति पत्र का प्रवेश; लेखक, कीवर्ड और यहां तक कि शब्द-आधारित मुफ्त टेक्स्ट खोजों पर ऑनलाइन खोज।

- **मल्टीमीडिया:** मल्टीमीडिया वह मीडिया है जो उपयोगकर्ताओं की जानकारी और मनोरंजन के लिए सूचना सामग्री और सूचना प्रसंस्करण (जैसे पाठ, ऑडियो, ग्राफिक्स, एनीमेशन और वीडियो, इंटरैक्टिव मीडिया) के कई रूपों का उपयोग करता है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, वॉयस चैटिंग, कंप्यूटर एनिमेशन, डेस्कटॉप पब्लिशिंग मल्टीमीडिया के बढ़ते महत्व के कुछ बेहतरीन

www.ignited.in

प्रमाण हैं। **(7)**

आईसीटी और पुस्तकालय पेशेवरों की भूमिका

आईटी ने सूचना के स्रोतों, वितरण और पहुंच को बदल दिया है। बदलते परिवेश में एक पुस्तकालय और सूचना पेशेवरों की भूमिका और कार्य को इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है, उन्हें सूचना के उपयोग को सुविधाजनक बनाना चाहिए, ज्ञान प्रणालियों और सूचना स्रोतों को नेविगेट करना चाहिए। पेशेवरों को सूचना समस्याओं पर परामर्श और सलाह देनी चाहिए और सूचना संसाधनों के इष्टतम प्रबंधन का ऑडिट करना चाहिए। उन्हें तकनीकी प्रणाली और सांस्कृतिक संसाधनों के बीच अनुवाद करना चाहिए। सिस्टम के बीच डेटा और सूचना प्रवाह के बीच एक परिवर्तन किया जाना चाहिए। उन्हें संगठनात्मक रणनीतियों के लिए सूचना नीति समर्थन की पेशकश करने और सूचना साक्षरता के लिए संसाधन प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए। पुस्तकालय पेशेवरों की उभरती भूमिका और कार्य उपयोगकर्ताओं की जरूरतों के करीब लाते हैं और इसलिए विश्व संसाधनों तक पूर्ण पहुंच के अलावा उपयोगकर्ताओं की सटीक आवश्यकताओं का मूल्यांकन करने की क्षमता होनी चाहिए। **(8)**

अनुसंधान एवं विकास पुस्तकालय: भारत में ऐतिहासिक विकास

भारत में प्रचुर मात्रा में तकनीकी पुस्तकालय हैं, जिन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: **(i)** सरकारी और अर्ध-सरकारी, **(ii)** विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षण संस्थानों में तकनीकी पुस्तकालय और **(iii)** अनुसंधान संस्थानों और समितियों से जुड़े पुस्तकालय। विद्वान समाजों के विकास के साथ शुरू हुई विशिष्ट संस्थाओं का विकास, सर विलियम जोन्स की पहल पर अस्तित्व में आया, उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश ने **1783** में भारत का दौरा किया। न्यायिक कर्तव्यों के अलावा, विद्वानों की गतिविधियों में उनकी रुचि विशेष संगठनों का संगठन था। स्थानीय केंद्र में किताबें, सेमिनार और विद्वान समाजों की स्थापना और **1784** में बॉम्बे में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बॉम्बे' की शुरुआत की। **(9)** इसके अलावा, अन्य सोसाइटी जैसे मैथमैटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, केमिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया और एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया आदि अस्तित्व में आए, जबकि इंडियन काउंसिल फॉर एग्रीकल्चरल रिसर्च और इंडियन काउंसिल फॉर मेडिसिन रिसर्च कृषि और चिकित्सा के लिए समर्पित हैं। क्रमश। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) मुख्य रूप से देश के विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग क्षेत्रों को बढ़ावा देने से संबंधित है। **(10)**

पुस्तकालयों में आईसीटी की आवश्यकता

पारंपरिक पुस्तकालय प्रणाली कई समस्याओं से मुक्त है और इस प्रकार आईसीटी की आवश्यकता उत्पन्न होती है। रिकॉर्ड की गई जानकारी के आकार के कारण पुस्तकालय कार्यों का मैनुअल प्रदर्शन बहुत मुश्किल है, जो उपलब्ध स्थान की तुलना में लगातार बढ़ रहा है। हर साल पुस्तकालय की जगह बढ़ाना मुश्किल है, जबकि पुस्तकालय में लगातार जानकारी बढ़ रही है, बहु-आयामी दिशाओं में, वर्तमान वैश्विक ज्ञान विस्फोट के कारण, आईसीटी के उपयोग के बिना भी मुश्किल समीक्षा की गई है। इस्लाम और इस्लाम (2006) ने पुस्तकालय और सूचना केंद्रों के प्रबंधन में आईसीटी के उपयोग के निम्नलिखित लाभों पर प्रकाश डाला: (11)

- रफ़्तार
- भंडारण
- शुद्धता
- विश्वसनीयता
- सघनता

आईसीटी के अनुप्रयोग ने स्वचालित कैटलॉगिंग, सर्कुलेशन सिस्टम, ऑनलाइन सूचना प्रणाली, ई-दस्तावेज़ वितरण प्रणाली और सीडीरॉम डेटाबेस की पहुंच आदि में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। वायरलेस संचार, आभासी संदर्भ सेवाओं और व्यक्तिगत वेब पोर्टल जैसी विशेषज्ञ प्रणालियों ने महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। पुस्तकालय और सूचना केंद्रों में परिवर्तन। आईसीटी ने पुस्तकालय पेशे को भी बदल दिया है जहां डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकालयों को पूरक करने के लिए और कुछ मामलों में पारंपरिक पुस्तकालयों को पूरी तरह से बदलने के लिए स्थापित किया जा रहा है। (12)

निष्कर्ष

विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में आईसीटी आवेदन पारंपरिक पुस्तकालयों के मॉडल को बदला जा सकता है। आईसीटी सूचना स्रोतों और सूचना चाहने वाले या उपयोगकर्ता के बीच अंतर ला सकता है। उत्तर पूर्वी

www.ignited.in

विश्वविद्यालय परिवहन और आर्थिक संसाधनों के कारण सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में कमी कर रहा है। पुस्तकालय मुख्य रूप से इस समस्या और आईसीटी में ज्ञान की कमी के कारण ग्रस्त है। इस अवधि के दौरान आईसीटी के बुनियादी ढांचे और पुस्तकालय के उपयोगकर्ता का अंतर है। आजकल अधिकांश उपयोगकर्ता आईसीटी ज्ञान के बारे में जानते हैं लेकिन विश्वविद्यालय पुस्तकालय कर्मचारियों की कमी और आईसीटी बुनियादी ढांचे की कमी के कारण संसाधनों की मांग और आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकते हैं।

संदर्भ

1. वशिष्ठ, एस। (2017)। लाइब्रेरी ऑटोमेशन एंड नेरवर्क्ड सर्विसेज: ए केस स्टडी एट द टेक्निकल डीम्ड यूनिवर्सिटी लाइब्रेरीज़ इन नॉर्थ इंडिया। आईएएसएलआईसी बुलेटिन, 52 (2), 120-126।

2. एस. लॉयड इफ़्फ़ान, पी. ए. (दिसंबर 2017)। अकादमिक पुस्तकालयाध्यक्षों के बीच ई-मेल का उपयोग: एक अध्ययन। जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 3 (2), 8-18।

3. फोर्ड, वाईएम (2017)। वेब खोजकर्ताओं की सफलता और विफलता के गुण: एक अनुभवजन्य अध्ययन। दस्तावेज़ीकरण के जर्नल, 63 (5), 659-679।

4. ए. कृष्ण मूर्ति, आई.सी. (जून 2016)। प्रबंधन के विशेष संदर्भ में कृषि सूचना प्रणाली और सेवाओं में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका, हैदराबाद। इंडियन जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन, लाइब्रेरी एंड सोसाइटी, 19 (1-2), 55-69।

5. वी.के.जे.जीवन, एम.एल. (2015)। पुस्तकालयों के लिए प्रौद्योगिकी संचालित सुरक्षा प्रणाली। IASLIC बुलेटिन, 50 (3), 142-156।

6. सिंह, पी.के. (2015)। पारंपरिक पुस्तकालयों का डिजिटल पुस्तकालयों में परिवर्तन: भारतीय संदर्भ में एक अध्ययन। पुस्तकालय विज्ञान के हेराल्ड, 44, 33-38।

7. रानी, पी.ए. (जून 2015)। इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं के उपयोग और उपयोगिता का मूल्यांकन। सूचना प्रबंधन के एसआरईएलएस जर्नल, 42 (2), 189-205।

8. के.सी.पांडा, एम.ए. (जून 2015)। इंटरनेट युग में संग्रह विकास और पश्चिम बंगाल में इंजीनियरिंग कॉलेज के पुस्तकालयों में एक संघ की आवश्यकता: एक अध्ययन। सूचना प्रबंधन के एसआरईएलएस जर्नल, 42 (2), 155-172।

9. जेबराज, वी.डी. (2015)। एचटीएमएल: लाइब्रेरी। भारतीय पत्रिका। इंफ लिब। और समाज, 18, 38- 44. (जेबराज, 2005)

10. जी.अरुमुगम, एम.ए. (जून 2015)। एसोसिएशन माइनिंग का उपयोग करके डिजिटल लाइब्रेरी में बार-बार एक्सेस पैटर्न की खोज करना। सूचना प्रबंधन के एसआरईएलएस जर्नल, 42 (2), 131-138।

11. जी.अरुमुगम, एम. ए. (जून 2015)। एसोसिएशन माइनिंग का उपयोग करके डिजिटल लाइब्रेरी में बार-बार एक्सेस पैटर्न की खोज करना। सूचना प्रबंधन के एसआरईएलएस जर्नल, 42 (2), 131-138।

12. अरोड़ा, पी.ए. (जनवरी-अप्रैल 2015)। डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण: वर्तमान परिवेश की आवश्यकता। पुस्तकालय विज्ञान के हेराल्ड, 44, 39-44।

Corresponding Author

Parul Shrivastava*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

www.ignited.in